॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-३

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद' का वाणी-वैभव

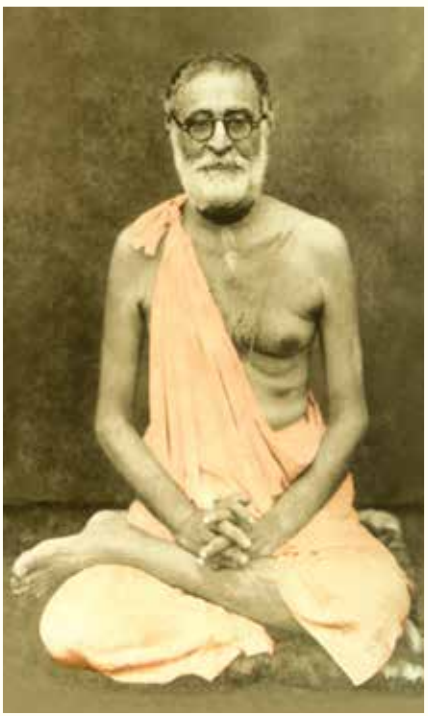

श्रीगुरुतत्त्व और श्रील प्रभुपाद

प्रश्न १—गुरु कौन हैं?

उत्तर—गुरु एवं वैष्णव अप्राकृत श्रीमन्दिर हैं। भगवान् जहाँ-तहाँपर प्रकाशित नहीं होते। वे गुरु एवं वैष्णवोंके हृदयमें ही अपनेको प्रकाशित करते हैं। अनेक लोग भगवान्का दर्शन करना चाहते हैं, किन्तु वे यह नहीं जानते कि गुरुके दर्शनसे ही भगवान्का दर्शन होता है। यदि श्रीगुरुपादपद्म न हों तो भक्ति प्रारम्भ ही नहीं होगी। गुरु ही कृष्णके श्रीचरणकमलोंके दर्शनमें योगसूत्र हैं। कृष्ण अपने सबसे श्रेष्ठ-सेवक या श्रेष्ठ-वैष्णवको इस जगत्में भेजकर जिस अपार करुणाका परिचय देते हैं, उस करुणाशक्तिके मूर्त्तविग्रह ही श्रीगुरुपादपद्म(श्रीगुरुदेव) हैं।

जो संसाररूप मृत्युसे मेरी रक्षा करते हैं, वे ही श्रीगुरुपादपद्म हैं। 'मैं मर जाऊँगा'—इस भयसे, इस आशङ्कासे जो मेरा उद्धार कर सकते हैं, वे

ही सद्गुरु हैं। जिनके समीप उपस्थित होनेसे दूसरे किसीकी कथा (विचार) सुननेकी आवश्यकता नहीं होती है—दूसरे किसीके निकट जाना नहीं होता, वे ही गुरुदेव हैं। समस्त मङ्गलोंके मङ्गल-स्वरूप भगवान्‌ने मेरे सभी मङ्गलोंका भार जिनके हाथोंमें अर्पण किया है, वे ही समस्त कल्याणोंके मूल श्रीगुरुपादपद्म हैं।

जिनकी कृपासे कर्त्तापनका अभिमान दूर होता है, वे ही श्रीगुरुपादपद्म हैं। जो हमारे कानोंमें श्रौतवाणी प्रदान करते हैं, जो निरन्तर हमारे कानोंमें श्रौतवाणीका अभिषेक करके हमको तृणसे भी सुनीच, वृक्षकी भाँति सहिष्णु, अमानी-मानद बनानेका प्रयास कर रहे हैं एवं सर्वदा हमारे मुखमें वैकुण्ठ-कीर्त्तन स्फुरित करनेके लिये शक्ति सञ्चार कर रहे हैं, वे कृष्णशक्ति ही श्रीगुरुपादपद्म हैं। श्रीगुरुपादपद्म ही हमें मायाशक्तिके चंगुलसे मुक्त कर सकते हैं।

समस्त जगत्‌वासी हमारे मान्य या नमस्य हैं, समस्त जगत् गुरुसेवाका उपकरण है, सभी हमारे सेव्य या गुरु हैं, मैं कृष्णसेवक हूँ, कृष्णसेवा ही मेरा धर्म है—यह दिव्यज्ञान जो प्रदान करते हैं, वे ही श्रीगुरुपादपद्म हैं।

गुरुदेव भगवान् होनेपर भी भगवान्‌के प्रियतम हैं। हमारे लिए श्रीकृष्णकी अपेक्षा श्रीगुरुदेवकी अधिक प्रयोजनीयता है। श्रीगौरसुन्दर समस्त गुरुओंके भी गुरु हैं। उन्होंने बताया कि गुरु भगवान्‌से अभिन्न होनेपर भी भगवद्भक्तोंके प्रधानतत्त्वके रूपमें गुरुतत्त्वका अवस्थान है। श्रीगुरुदेव कृष्णके प्रेष्ठ तथा वैष्णवोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं। वे भक्तराज, सेवक-भगवान्, सेवाविग्रह, आश्रयविग्रह हैं। वे कृष्णकी भाँति विषय-विग्रह या भोक्ता-तत्त्व नहीं हैं।

प्रश्न २—कौनसे गुरु संसार-बंधनसे हमारी हमारी रक्षा कर सकते हैं?

उत्तर—श्रीचैतन्यमहाप्रभुके प्रियजन श्रीगुरुदेव ही संसाररूप मृत्युसे हमारी रक्षा कर सकते हैं। गुरु कौन हैं? इस विषयपर हमें विचार करना चाहिए। जो समस्त गुरुओंके एकमात्र आराध्य हैं, ऐसे पूर्णवस्तु भगवान्‌की सेवामें जो नियुक्त हैं, वे ही गुरु हैं। वैसे तो गुरु बहुत होते हैं। जैसे—कुश्ती सिखानेवाले, तैराकी सिखानेवाले, खेल सिखानेवाले या स्कूल-कालेजोंमें जागतिक शिक्षा देनेवाले। परन्तु इनमेंसे एक भी गुरु ऐसा नहीं है, जो हमें मृत्युसे बचा सके, अर्थात् इस दुःखमय संसारमें हमारे आवागमनको रोक सकें, क्योंकि वे तो स्वयं ही अपनेको बचानेमें असमर्थ हैं। अतः यहाँपर ऐसे गुरुओंकी बात नहीं कही गयी है। श्रीमद्भागवतमें भी कहा गया है—वह गुरु, गुरु नहीं है; वे मातापिता, मातापिता नहीं हैं; वह देवता, देवता नहीं है; वे बन्धु-बान्धव, बन्धु-बान्धव नहीं हैं—जो हमें भक्तिका उपदेश प्रदानकर हमारी मृत्यु अर्थात् संसारमें हमारे आवागमनको न रोक सके, इस जड़जगत्‌के प्रति आवेशरूपी मृत्युसे हमारी रक्षा न कर सकें।

अज्ञानके कारण अर्थात् भगवान्‌को भूलनेके कारण ही हमें मृत्युके मुखमें जाना पड़ता है—जन्म-मरणके चक्करमें पड़ना पड़ता है। ज्ञान होनेपर सहजरूपमें ही हम मृत्युके मुखमें जानेसे बच सकते हैं। इस संसारमें हम जो विद्या ग्रहण करते हैं, यदि किसी कारणसे हम पागल हो जाएँ, हमें पक्षाघात (लकवा) हो जाए या हमारी मृत्यु हो जाए, तो उस समय इस विद्याका कुछ भी मूल्य नहीं रहता। जो गुरु हमें मृत्युके मुखसे बचा नहीं सकते, वे कुछ दिन तो हमारे लिए विषय-भोगोंकी व्यवस्था कर देते हैं, अर्थात् हमें ऐसी शिक्षा प्रदान करते हैं जिसके द्वारा हम नाशवान शारीरिक सुखकी वस्तुओंको एकत्र कर लेते हैं, परन्तु वे हमें इस संसारके प्रति आसक्तिरूप मृत्युसे बचा नहीं पाते। अतः ऐसे सब गुरु वञ्चक हैं।

प्रश्न ३—गुरु कहाँ मिलेंगे?

उत्तर—कृष्ण अत्यन्त करुणामय हैं। अतः करुणापूर्वक वे जिनको तुम्हारे गुरुके रूपमें भेजेंगे, वे ही महान्तगुरु (दीक्षागुरु) के रूपमें तुम्हारे सामने प्रकाशित होंगे। भगवान्‌की कृपासे गुरु मिलते हैं तथा गुरुकी कृपासे भगवान् मिलते हैं। अपने-अपने भाग्यके अनुसार ही गुरु मिलते हैं। भगवान् सर्वज्ञ हैं, अतः वे विभिन्न लोगोंकी विभिन्न चित्तवृत्तियोंके अनुसार ही गुरुको भेजते हैं। जो भगवान्‌की निष्कपट कृपा चाहते हैं, अर्थात् जो केवल भगवान्‌की सेवा चाहते हैं तथा अपने आत्मकल्याणके लिए पूर्णरूपसे भगवान्‌के ऊपर निर्भर हैं, ऐसे सरल तथा निष्कपट व्यक्ति पर प्रसन्न होकर उसपर कृपा करनेके लिए भगवान् स्वयं ही गुरुके रूपमें प्रकट होते हैं। शास्त्रोंमें जहाँपर भी गुरुको भगवान्‌का स्वरूप बताया गया है, वहाँपर ऐसे गुरुको ही समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त जो भगवान्‌की सेवा नहीं चाहते, बल्कि सांसारिक वस्तुएँ या भुक्ति एवं मुक्ति चाहते हैं, ऐसे कपटी लोगोंकी चित्तवृत्तिके अनुसार भगवान्‌की माया ही उनके निकट कपटी गुरुको भेज देती हैं।

प्रश्न ४—क्या श्रीगुरुदेव मनुष्य हैं?

उत्तर—कदापि नहीं। श्रीगुरुदेव क्षणभङ्गुर रक्त एवं मांसका एक पिण्डमात्र नहीं हैं। श्रीमद्भागवतमें कहा गया है—श्रीगुरुदेव भगवान् ही हैं, अर्थात् भगवान्‌के अवतार (शक्त्यावेशावतार) हैं।

श्रीगुरुदेव कृपापूर्वक स्वयं ही परजगत्‌से इस जगत्‌में आते हैं। प्रकट एवं अप्रकट दोनों ही लीलाओंमें वे नित्य विराजमान हैं। वे सर्वदा ही हमारे नियामकके रूपमें विराजमान रहकर हमें भगवान्‌की सेवाके लिए प्रेरित करते हैं।

सच्चिदानन्द श्रीगुरुदेव अतिमर्त्य महापुरुष हैं। उन्हें एक साधारण मनुष्य माननेपर निश्चितरूपसे नामापराध होता है, जिसके फलस्वरूप नरक गति प्राप्त होती है। वे आत्मविद्-कृष्णतत्त्वविद् हैं अर्थात् वे आत्मतत्त्व एवं कृष्णतत्त्वको जानते हैं। वे श्रीचैतन्यमहाप्रभुके अत्यन्त प्रियजन हैं। हमारे जैसे पतितोंका उद्धार करनेके लिए ही वे अवतीर्ण होते हैं। वे कर्मी, ज्ञानी या योगी नहीं हैं, लीलामय भगवान्‌की लीलाओंके पार्षद या सङ्गी हैं। वे सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं।

देवता जिस प्रकार नित्य हैं, उसी प्रकार श्रीगुरुदेव भी नित्य हैं। देवता शब्दका अर्थ यहाँपर इन्द्र आदि नहीं है, बल्कि अप्राकृत कामदेव—कृष्ण है। श्रीगुरुदेव उन्हीं कृष्णस्वरूप अर्थात् कृष्णसे अभिन्न, कृष्णके प्रकाश-विग्रह हैं।

श्रीगुरुदेव कृष्णसे अभेद विचारसे उपास्यकी पराकाष्ठा हैं। वे भगवान्‌के अतिप्रिय हैं। श्रीगुरुदेव आश्रयजातीय तत्त्व तथा श्रीकृष्ण विषयजातीय तत्त्व हैं। श्रीगुरुदेव सेवक-भगवान् तथा श्रीकृष्ण सेव्य-भगवान् या स्वयं भगवान् हैं। श्रीगुरुदेव मुकुन्दप्रेष्ठ (प्रिय) हैं। रागमार्गसे भजन करनेवाले शिष्यके स्वरूपसिद्ध हो जानेपर उसे श्रीगुरुदेव श्रीकृष्णकी शक्ति या उनसे अभिन्न श्रीवार्षभानवी श्रीमती राधिकाके प्रकाशके रूपमें दिखाई पड़ते हैं।

कृष्णप्रेष्ठ श्रीगुरुदेव स्वरूपशक्ति हैं, किन्तु श्रीकृष्ण शक्तिमान हैं। श्रीकृष्ण पुरुष या भोक्ता हैं तथा श्रीगुरुदेव श्रीकृष्णकी शक्ति या उनकी कान्ता हैं।

('श्रील प्रभुपादके उपदेशामृत' नामक ग्रन्थसे अनुदित)

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोंको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति – श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली